B.A Part I
Paper IInd

8.8.20

केन्ज प्रभाव की आलोचना :-
(Criticisms of Keynes effects)

इसकी आलोचना (Its criticisms) :- ~~हैन~~ हैनसन, पेटिनकिन तथा अन्य अर्थशास्त्रियों ने निम्न आधारों पर केन्ज़ प्रभाव की आलोचना की है।

1. पैटिनकिन ने केन्ज़ की आलोचना करते हुए कहा है कि केन्ज़ ने मुद्रा-मजदूरी कटौती के प्रभावों को केवल लेन-देन तथा सतर्कता नकदी शेषों तक सीमित कर दिया है और मुद्रा ~~##~~ की सट्टा माँग को एकमात्र ब्याज की दर पर निर्भर बनाकर रख दिया है। इससे उसके मुद्रा-मजदूरी लचीलापन के विश्लेषण में तीन दोष आ गए हैं।

(क) वास्तविक शेष प्रभाव (Real Balance Effect) - केन्ज़ ने उपभोग पर तथा मुद्रा की माँग पर वास्तविक शेष प्रभाव की उपेक्षा कर दी। हैनसन का मत है, "इस बात का कोई ~~परिणाम~~ प्रमाण नहीं मिलता कि केन्ज़ ने पीगू प्रभाव के बारे में कभी सोचा भी हो। गिरती कीमतों के परिणाम के संबंध में ~~लम्बे~~ लम्बे विवाद में General Theory के प्रकाशन से पहले इसका अस्पष्ट-सा उल्लेख भरा हुआ था।" इस संबंध में पेटिनकिन लिखता है कि "संभावना यह प्रतीत होती है कि उसने (केन्ज ने) उपभोग पर (अथवा यों कहिए कि बचतों पर) धन के प्रभाव को समझा ही नहीं, बल्कि गैर-मौद्रिक परिसम्पत्तियों के रूप में ही इस प्रभाव के बारे में सोचा।"

(ख) मुद्रा भ्रान्ति (Money Illusion) - केन्ज की मान्यता है कि मुद्रा की सट्टा माँग में 'मुद्रा भ्रान्ति' विद्यमान रहती है। पेटिनकिन के मतानुसार, केन्जीय मौद्रिक सिद्धान्त यह मानता ही नहीं कि ब्याज की नीची दर के सिवाय मुद्रा की सट्टा माँग मुद्रा की

Scanned by CamScanner

बढ़ी हुई पूर्ति को खपा लेती है। जब मजदूरी-कीमत अवस्फीति के परिणामस्वरूप मुद्रा की पूर्ति बढ़ती है, तो ब्याज दर गिर जाती है और मुद्रा की सट्टा मांग में मुद्रा भ्रान्ति उत्पन्न कर देती है।

(ख) कीमत स्तर प्रत्याशाएँ (Price Level Expectations) – केन्ज़ ने मुद्रा की मांग पर कीमत-स्तर प्रत्याशाओं के प्रभाव की उपेक्षा की है। उसका विश्लेषण मुद्रा मजदूरी एवं कीमतों में एकबारगी तथा हमेशा के लिए कटौती पर आधारित है जो मजदूरी एवं कीमत में आगे और कटौती की किन्ही भी प्रत्याशाओं को उत्पन्न नहीं होने देता। व्यवहार में प्राय: ऐसा होता है कि मजदूरी और कीमत में एक बार कटौती होती है तो उसके परिणामस्वरूप आगे और कटौतियाँ होती हैं और इस तरह की निराशावादी प्रत्याशाएं निवेश संबंधी निर्णयों पर प्रतिकूल प्रभाव डालेंगी।

2. जैसा कि शेपीरो ने कहा है, केन्ज़ की तरलता जाल विषयक धारणा एक चरम (extreme) स्थिति है क्योंकि वह तो गहरी मन्दी के दौरान ही घटित हो सकती है। क्योंकि महान मन्दी जैसी मन्दी फिर कभी नहीं आई; इसलिए अर्थशास्त्री तरलता जाल के बारे में अब बिल्कुल भी चिन्तित नहीं हैं और वे तो उसके अस्तित्व तक में सन्देह करने लगे हैं। पर, केन्ज़ के कुछ अनुयायी मानते हैं कि शून्य ब्याज दर पर तरलता जाल का अस्तित्व होता है क्योंकि कोई भी ऋणदाता ऋणात्मक ब्याज पर उधार नहीं देगा।

3. असंवेदनशील ब्याज दर (Insensitive Interest Rate) – पेटिनकिन केन्ज़ की इस बात से सहमत नहीं है कि यदि निवेश, ब्याज दर में कमी के प्रति पूर्णतया असंवेदनशील होगा, तो मजदूरी-कीमत लचीलापन पूर्ण रोजगार की स्थिति नहीं ला सकेगा। पेटिनकिन का मत है के यदि बचत तथा निवेश फलन, ब्याज दर में परिवर्तनों के प्रति पूर्णरूप से असंवेदनशील हों, तो भी मजदूरी में होने वाली कटौती वास्तविक शेषों पर अपने प्रभाव के माध्यम से प्रोत्साहित होगी और पूर्ण रोजगार की स्थिति ले आएगी।

Scanned by CamScanner

4. मजदूरी-कीमत अवस्फीति (Wage-Price Deflation) – यदि नीची मजदूरी और कीमतों के अनुरूप कर्जदारों की शर्तों में परिवर्तन नहीं किया जाता, तो संभावना यह है कि मजदूरी -कीमत अवस्फीति की नीति के कर्जदारों और कर्ज देने वालों पर गंभीर वितरणात्मक प्रभाव पड़ेंगे। जब मुद्रा मजदूरी और कीमतें गिरेंगी, तो मौद्रिक ऋण का वास्तविक मूल्य बढ़ जाएगा। परिणामत: कर्ज देने वाले तो कर्ज की सीमा तक अधिक धनी और कर्जदार कर्जे की सीमा तक अधिक गरीब हो जाएँगे। फिर, इस संबंध में पहले से कुछ कह सकना भी संभव नहीं है कि समस्त निवेश अथवा उपभोग व्यय पर इन पुनर्वितरण प्रभावों का शुद्ध (net) परिणाम क्या होगा ?, हो सकता है कि कर्जदाता तो लाभों के कारण अपना खर्च बढ़ा दें और कर्जदार हानियों के कारण अपना खर्च घटा दें। अत: निवेश या उपभोग का समस्त व्यय पर शुद्ध प्रभाव की भविष्यवाणी नहीं की सकती है।

5. सैद्धांतिक संभावना (Theoretical Possibility) – केन्ज स्वयं यह मानता था कि रोजगार बढ़ाने के लिए कीमत -मजदूरी अवस्फीति की नीति एक सैद्धान्तिक संभावना है। क्योंकि मजदूरी कटौतियाँ करने में अनेक संस्थानिक बाधाएं हैं। वास्तव में, मजदूरी कटौतियाँ, मजदूरी अर्जित करने वालों की मुद्रा-आय तथा खर्चों को घटा देती हैं। उनसे उत्पादन, रोजगार और आय कम हो जाते हैं। यह नहीं कि उत्पादन रोजगार और आय कम होन से मुद्रा आय खर्च घट जाएं।

6. असमर्थ (Incapable) – हैनसन के मतानुसार, रोजगार बढ़ाने के लिए मजदूरी कीमत, अवस्फीति प्रक्रिया एकदम निरर्थक है। यदि आय की सापेक्षता में अधिक मुद्रा और अधिक तरल परिसम्पत्तियों की ही जरूरत है तो इसका सीधा तरीका है कि मौद्रिक नीति के माध्यम से यह लक्ष्य पूरा किया जाए। केन्ज ने स्वयं कहा है कि निरंतर पूर्ण रोजगार को बनाए रखने में लचीली मजदूरी-कीमत नीति असमर्थ है। इसलिए वह लचीली मजदूरी नीति के मुकाबले लचीली मौद्रिक नीति के पक्ष में था।

Scanned by CamScanner